Downloaded from www.studiestoday.com

Periodic Test – 1 Class – 7 Sanskrit

<u> अथमः पाउः</u> – अस्माकं देशः
पाठ लग अनुवाद
अस्मान देश:
अनुवाद _ हमारा देश भारत हमारा गौरव है। इसका प्राचीन (पुराना)
नाम आर्थवर्त था। विश्व की पाचीन संस्कृति भारत में ही जीवित
है। भारत की उत्तरिया में हिमालय मुकुट की तरह शोभित है।
दिस्ता दिशा में सागर नार्न जात हमें पर दीता है।
(य) भारते ग्रीहम:
Grant State of State
अनुवाद _ भारत में भी छा, वर्षा, श्रास्ट है मन्त निर्वाधार तथा वसन्त में छः
मन्त्र होती हैं। ये भारत के प्राकृतिका सौंदर्य की बहाती हैं। भारत
की हरी अरी फसकें तथा नया नया मनोरं जन रूप की गों कें मन की
आकर्षित कार ला है। विदेशी भी भारतभूमि की खुन्दरता को देखकर
यसन होते हैं।

(3) अस्मानं देशः राष्ट्रगानं गायामः ।
अनुवाद _ हमारा देश अनेक गुठों से सम्यन्न है। यह ज्ञानभीम पुण्यभीम, हामभीम क्रिया कमिश्रीम इस नाम से भी ग्रीसिंह है। यहीं ज्ञान का संयम
उत्य इआ था। यहाँ बहुत से देवपुरूष निर्मालन जीठातज्ञ दार्शनिका, वैज्ञानिक, क्रीव तथा बाटककारों ने जन्म किया। जनिक यहाँ अक्रग-
अल्ला लोग, आधार, नेशा शुधा, धर्म और सम्प्राय है नेफर भी
कींगी में अनेकारा में बीरकाता की श्रीतक स्मेंह चारा बहती है। हम सभी भारतीय रूक राहद्रहवान की नगरकार कारते हैं तथा रुक ही
राष्ट्रभाम गार्न है।
(५) यह भारतराष्ट्र वन्दर्भीय हैं। इसला विकास और प्रगति हमारा महत्वप्रुर्ण कर्निव्य है। धन्य है हमारा भारत देश, इसीकरूर हम भारतीय भी धन्य
हैं। हमारे भारतीयों कारी सत्य में ही निह्या है। हम नित्य सी भारत
न्नी ही याद नारते हैं। भारत ही हमारा जीवन है।
(र) रण्क पद में उत्तर -
(ग) हिमालयः (ग) भारतवसुधायाः (ङ) भारतपनाना
(स्व) रेगाणरस्य (स) अतिमा

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(५) पूर्ववाक्यमें उत्तर —
(का) भारतस्य पाचीनं नाम आर्यवर्तः आसीत् ।
(रन) षट् ऋतनः भारतस्य प्राकृतिकं सीदये नद्ययिन्त ।
(ग) अस्मान्नं देशः नानापर्दः छोसद्धः ।
(ध) अत्र बहुवः देवपुरुषाः, जीवातजाः, कवमः न्यादि अजायन्त ।
(इ.) वर्य सर्वे भारतीयाः कर्कं राष्ट्रश्वर्जं नमामः ।
दिनायः पाठः - मुर्वः कावाः
पाठ ना अनुवाद
(1) राजारिमन वर्गे
अनुवाद - राजा जिंगाम में राजा को आ रहता था। वह बहुत
ही भूरता था। वह भीपन के किर इहार- उद्यर दूम रहा था।
तम उसमें राजा रोडी पारत नारी
(प्र) सः नानाः
अनुवाद - वह कोआ शेरी की उपामी न्वींच में द्वाकार पड
न्ती शारवा पर वेड ग्रामा रुवरी रुवरी वह रोश रवाने न
सीन रहा था। तभी राजा को मडी वर्ते आ गई। वह भी
भूरवी थी। असर्वे और की रोटी देखी। असके मनं में mime
30400 5311
5311
(3) तरा सा कोमशा - अगगब्द्धम् । अनुवाद - तब उस कीमड़ी ने रूक उपाय सीचा। वह कोर से
(3) तरा सा कोमशा अग्राहरी में राक उपाय सीचा। वह कौरा से अनुवाद - तब उस कोमड़ी में राक उपाय सीचा। वह कौरा से बोकी - "हे कीस्टा, तुम बहुत ही सुन्दर है।। तुम्हारा काकारी
(3) तरा सा कोमशा अग्राहरी में राक उपाय सीचा। वह कौरा से अनुवाद - तब उस कोमड़ी में राक उपाय सीचा। वह कौरा से बोकी - "हे कीस्टा, तुम बहुत ही सुन्दर है।। तुम्हारा काकारी
(3) तरा सा कोमशा अगिर्धा अगिर्धा माना नह कोस्य से अनुवाद - तब उस कोमड़ी ने रूक उपाय सोचा। नह कोस्य से बोक्जी - "हे कोस्य। तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काकारी अस्यंत आकाधित करने नाका है। तुम मधुरगीत गाते हो। में तुम्हारा मधुर गीत सुनना चाहती हैं। इसक्तिस्य यही आओं।
(3) तरा सा कोमशा अगगब्द्धम् । अगगबद्धम् । अगुनाद - तन उस कोमशी ने रूक उपाय सोचा। नह कोर से बोकी - "हे कोष्ण! तुम नहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काकारी अलग अग्नि कार्त हो। तुम्हारा कार्का है। तुम महुर गीत गाँत हो। में तुम्हारा महुर गीत सुनमा चाहती है। इसिक्श थही आओं। (4) स्वप्रशीसो अलग
(3) तदा सा कोमशा अगगब्द्धम् । अनुवाद - तन उस कोमड़ी ने रूक उपाय सोचा। वह कोर से बोकी - "हे कोम्डा तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काकारिंग अल्ये आकाधित करने वाका है। तुम मधुर गीत गाँत हो। में तुम्हारा मधुर गीत सुनवा चाहती है। इसिक्स थही आओं। (५) स्वप्रशंसो भुत्वा अर्था सुनकर को आ अत्यन्त प्रसन्न हुआ।
(3) तदा सा लोसशा अनुवाद - तब उस लोसड़ी ने रूल उपाय सोचा। वह लीस से बोली - "हे लोस ! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काला रंग अर्थात आकाधित करने नाला है। तुम महुर जीत गाते हो। में तुम्हारा महुर जीत सुनना चाहती है। इसीलरू घटी आ औं। (4) स्वप्रश्री भुला अनुवाद - अपनी धर्मारा सुनकर क्लोआ अत्मन्त धरान्न हुआ। जन वह 'कॉन-कॉन 555 यह भीत गा रहा था, तन उसके मुंह
(3) तदा सा लोमशा अनुवाद - तब उस लोमड़ी ने रुक उपाय सोचा। नह नोर से बोजी - "हे नोसड़ी ने रुक उपाय सोचा। नह नोर से बोजी - "हे नोसड़ा नुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा कालारी अलंग आकाधित करने नाला है। तुम मधुर जीत गति हो। में तुम्हारा मधुर जीत सुनना चाहती हैं। इसिक्स घटी आओं। (4) स्वप्रशंसी सुला अनुवाद - अपनी धर्मासा सुनकर क्रोआ अत्मन्त धर्मन्म हुआ। अन वह 'कॉन-कॉन ५६५ यह भीत गा रहा था, मन उसके मुंह से रोटी जमीन पर गिर गड़ी चतुर कोमड़ी अव्यन्त धर्मन्म हुई। इसने रहुशा होकर शेटी स्वाई। इसने बाद वह नीर सेबीजी-
(3) तरा सा कोमशा अनुवाद - त न उस कोमड़ी ने रुक उपाय सोचा। वह कोर से बोकी - "हे कोटा! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काकारीश अतमा आकाधित करने नाका है। तुम मधुर जीत जाते हो। में तुम्हारा मधुर जीत सुनना चाहती है। इसिक्स थरी आसी । (4) स्वप्रश्रीसी भुत्वा अनुवाद - अपनी धर्मासा सुनकर को आ अत्मन्त धरमन इसा। जन वह 'कॉन-कॉन ५६६ यह जीत गा रहा था, तन उसके मुंह से रीटी जनीन पर गिर गई। चतुर कोमड़ी अत्मन्त धरमन हुई। उसने रक्षश्री होकर रोटी स्वाई। इसके बाद वह कोर से बोकी- 'गाने के साथ भीजन कराने के किस धन्मवाद।' मूर्स कोमा
(3) तदा सा लोभशा अनुवाद - तब उस लोमड़ी ने रुक उपाय सोचा। नह कोर से बोकी - "हे लोमड़ी ने रुक उपाय सोचा। नह कोर से बोकी - "हे लोमड़ी नुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा कालारंग असमें आकाधित करने नाला है। तुम मधुर भीत गाते हो। में तुम्हारा मधुर भीत सुनना चाहती है। उसीकर यही आओं। (4) स्वपुर्शिसा सुनना चाहती है। उसीकर यही आओं। (4) स्वपुर्शिसा सुनना चाहती है। उसीकर यही आओं। (5) स्वपुर्शिसा सुनना कालार को आ अत्मन्त धरान्न हमा। (5) स्वपुर्शिसा सुनना कालार को आ अत्मन्त धरान्न हमा। (6) स्वपुर्शिसा सुनना चाहती है। उसीकर यह शा असने हमा। (7) स्वपुर्शिसा सुनना कालार को आ अत्मन धरान्न हमा। (8) स्वपुर्शिसा हो कार रोटी स्वाई। इसके बाद वह कोर से बोली- (9) स्वपुर्शिसा हो कार रोटी स्वाई। इसके बाद वह कोर से बोली- (1) स्वपुर्शिसा हो कार रोटी स्वाई। इसके बाद वह कोर से बोली- (1) से के साथ भीपन कारोने के लिए धन्यवाद। मूर्ल कोआ। (1) से के साथ भीपन कारोने के लिए धन्यवाद। मूर्ल कोआ।
(3) तदा सा लोसशा अग्रहाम । अग्रवाद - तब उस लोसड़ी ने रूक उपाय सोचा। वह कंतर से बोकी - "हे लोक! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काला रंग अग्रवाद - तब उस लोसड़ी ने रूक उपाय सोचा। वह कंतर से बोकी - "हे लोक! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काला रंग अग्रवाद मा अप काला साहती है। इसील रूप यही आ औ"। (4) स्वपुर्शासा भुत्वा अग्रवाद - अपनी कर्तासा सुनकर क्लोआ अत्मन्त प्रसन्न हुआ। अन्व वह 'कॉन-कॉन 555 यह बीत गा रहा था, तव उसके मुंह से सेटी जमीन पर गिर बोही - नत्र कोमड़ी अव्यन्त प्रसन्न हुई। अभेने रहाशा होकर रोटी स्ताई। इसके बाद वह कोस्पर्स बीली- गाने के साथ भोजन कराने के किए धन्मवाद। मूर्स क्लोआ कि: शब्द हो बागा। अर्थात वह कुछ भी न बोल पाया।
(3) तदा सा कोमंशा अनुवाद - तब उस कोमंशी ने एक उपाय सोचा। नह कोए से बोकी - "हे कोहा! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा काकार्रग अनुवाद - तब उस कोमंशी ने एक उपाय सोचा। नह कोए से तुम्हारा मधुर कति सुनना चाहती है। उस्तिक्य थरी आते हो। में तुम्हारा मधुर कति सुनना चाहती है। उस्तिक्य थरी आते हो। (4) स्वप्रश्रांसो भुला अनुवाद - अपनी छर्मारा सुनकर को आ अत्मन धरमन इसा। अन वह 'कॉन - कॉन 5 5 5 यह भीत गा रहा था, तब उसके मुंह से सीटी जमीन पर गिर गही। चतुर कोमंशी अत्मन धरमन इर्रा उस्मैन रख्या होकर रोटी स्वाई। इसके बाद वह कोस्यसे बोजी- 'गाने के साथ भोजन कराने के िक शिक्य धरमनाद।' मूर्स कोमा िन: थावद हो गया। अथीत वह खुछ भी न बोक पाया। (क) मुर्शास्य शास्तामाँ काला: उपानिक्शात्।
(3) तदा सा लोभशा अनुबद्धमें । अनुबद्धमें अनुवा चाहती हैं। इसिल्य भरी आजें। (4) स्वप्रश्रासी अनुवा अनुबद्धमें अनुवा अनुबद्धमें अनुवा अनुबद्धमें अनुवा अनुवाद्धमें अनुवा अनुवा अनुवाद्धमें अनुवा अन
(3) तरा सा लोभशा अव्यक्त न त उस लोभशे ने रुक उपाय सोचा। नह कोर से बोकी - "हे कोरु! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा कार्लार गाँवा। मह कोर से बोकी - "हे कोरु! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा कार्लार गाँवा। महर कीर सुन्ना नाहती है। उसिक्स थरी आओं। (4) स्वप्रश्रासी भुत्वा अनुवाद - अपनी फर्सासा सुनकार को आ। अत्मन्त प्रसन्न इसा। पन वह 'कॉव - कॉव ड ड घह बीर गा रहा था, तव उसके मुंह से सेटी प्रमीन पर गिर बाई। नत्र कोमड़ी अव्यन्त प्रसन्न इर्र। इस्नें रहुशा होकर रोटी स्वाई। इसके बाद वह कोर्य से बीकी- 'गाने के साथ भीपन कराने के किर धन्मवाद।' मूर्ल कीआ निः शब्द हो ग्या। अर्थात वह कुछ भी न बीक पाया। (5) पूर्ण वाक्य में उत्तर- (6) स्वासाया कार्करम् प्रशंसाम् अकरोत्। (श) कालस्य सीटिका भूमी अपतर।
(3) तदा सा लोभशा अनुबद्धमें । अनुबद्धमें अनुवा चाहती हैं। इसिल्य भरी आजें। (4) स्वप्रश्रासी अनुवा अनुबद्धमें अनुवा अनुबद्धमें अनुवा अनुबद्धमें अनुवा अनुवाद्धमें अनुवा अनुवा अनुवाद्धमें अनुवा अन
